

कमल भँवर तहँ भूलि न आवै ॥ कह गिरधर कविराय
जहाँ तक बूझि बड़ाई । तहाँ न करिये साँझ प्रातही
चलिये साई ॥

७६ नैना तब परबश भये उत्तम गुण सब जाय ।
वे फिरि फिरि चोरी करै ये फिरि फिरि लपटाय ॥ ये फिरि फिरि
लपटाय नेत्र बहु रै भरि आवै । खान पान सब त्याग रात
दिन ही दुख पावै ॥ कह गिरधर कविराय सुनो तुम श्रवण
बि नैना । लोग दई अकलंक परे जब परबश नैना ॥

८० साई सुमन पलास पर सुवा रह्यो जो आय ।
लाल कली सो चोंच पर मधुकर बैठो जाय ॥ मधुकर
बैठो जाय सुवा तत्काल बचायो । कोटि कष्ट परि पाय
मारि करि छूटन पायो ॥ कह गिरधर कविराय वेगि
घर बजै बधाई । दीजै बिदा पलास जियत घर जैये साई ॥

८१ साई तेली तिलन सो किया नेह निर्बाह ।
छाँटि फटक ऊजर करा दई बड़ाई ताहि ॥ दई बड़ाई
ताहि पंचमहँ सिगरे जानी । दे कोल्हू में पेरि करी
एकत्तर घानी ॥ कह गिरधर कविराय यही माया

प्रभुताई । माया सब से भली मानु मति मेरी साई ॥

८२ साई सुवा प्रवीन अति बानी बदन बिचित्र ।
रूपवन्त गुण आगरेराम नाम सोचित्त ॥ राम नाम सो
चित्त और देवन अनुराग्यो । जहाँ २ तुम गयो तहाँ तुम
नीको लाग्यो ॥ कह गिरधर कविराय सुवा चूक्यो
चतुराई । बृथा किया बिश्वास सेय सेमर को साई ॥

८३ गदहा थोरे दिनन में खूब खाई इतरात ।
अफरान्यो मारन कह्यो ऐराकी को लात ॥ ऐराकी
को लात देत शंका नहि आने । ऐराकी सँग रहे
ताहि कोऊ नहि जाने ॥ कह गिरधर कविराय रहैगा
तौलौ जबहा । ऐराकी की लात सहेगा कैसे गदहा ॥

८४ महुआ नित उठि दाख से करत मसलहत
आय । हम तुम रूखे एकसे हूजत है रसराय ॥ हूजत
है रसराय बिलग जनि याको मान्यो । मधुर मिष्ट
हम अधिक कलुक जियसे जनि जान्यो ॥ कह गिर-
धर कविराय कहल साहब से रहुआ । तुम नीचे फल
बेलि बृक्ष हम ऊँचे महुआ ॥

८५ गुलतुरा सो जाय के बार्ता करत करील ।
हम तुम सूखे एक सो पूछ देखिये भील ॥ पूछ
देखिये भील भेद जो जानै मेरो । ताहू पूछ बुलाय भेद
जो जानै तेरो ॥ कह गिरधर कविराय नातरि करिहौ
हुरा । अब जनि भूलि गुमान करो फिरिहो गुलतुरा ॥

८६ हुका बांधो फंट में नैचा गहि लइ हाथ ।
चले राह में जात हैं लिये तमाकू साथ ॥ लिये तमाकू
साथ गैल को धंधा भूल्यो । गइ सब चिन्ता भूलि
आग देखत मन फूल्यो ॥ कह गिरधर कविराय
यमन कर आया रुका । जिय ले गयो जो काल
हाथ में रहिगो हुक्का ॥

८७ पगड़ी सूही बाँधि के भयो सिपाही लोग । घास
बँचि के खात हैं भयो गाँव में रोग ॥ भयो गाँव में
रोग पूछ निबरी देखावहु । मन में बड़े हो छैल राग
पनघट पर गावहु ॥ कह गिरधर कविराय मही तुमते है
चूही । भये सिपाही आनि बाँधि के पगड़ी सूही ॥
८८ पानी बाढ़ो नाव में घर में बाढ़ो दाम । दोनों

हाथ उलीचिये यही सयानो काम ॥ यही सयानो
काम राम को सुमिरन कीजै । परस्वारथ के काज
शीश आगे धरि दीजै ॥ कह गिरधर कविराय
बड़न के याही बानी । चलिए चाल सुचाल राखिये
अपनो पानी ॥

८६ राजा के दरबार में जैये समया पाय । साईं तहाँ
न बैठिये जहाँ कोउ देय उठाय ॥ जहाँ कोउ देय उठाय
बोल अनबोले रहिये । हँसिये ना हहराय बात पूछेते
कहिये ॥ कह गिरधर कविराय समय जो कीजै काजा ।
अति आतुर नहिं होय बहुरि अनखैहै राजा ॥

६० कृतघन कतहुँ न मानहीं कोटि करै जो
कोय । सर्वस आगे राखिये तऊ न अपनो होय ॥
तऊ न अपनो होय भले की भली न मानै । काम
काढ़ि चुप रहै फेरि तिहिं नहिं पहिचानै ॥ कह गिर-
धर कविराय रहत तिनही निर्भय मन । मित्र शत्रु
ना एक दाम के लालच कृतघन ॥



बैताल का छप्पै ।

प्रथम लगन जबही लगी तबहि कछु और न सूझे ।
 सुध बुध गई हेराय तबहि सम्मुख हो जूझे ॥ विरह
 तेग तलवार सैल अति बज्जर भारी । तपत रहे दिन
 रनि घाव अन्तिम तनकारी ॥ नित मरना नित
 जिवना सो रैनि पलट को दीजिये । बैताल कहै सुन
 विक्रम जो मित्र कहै सो कीजिये ॥

यश कारण बलिराज बावन को तिरलोक दिये ॥
 यश कारण राजा करण कमठ को कछु न शोच किये ॥
 यश कारण जगदेव शीश कंकालिहि अप्यो ॥
 मोरध्वज यश हेतु स्वकर शोणित सुत तप्यो ॥ यश
 अजर अमर बैताल भनत जो यश अमर पदाइये ।
 अश्वपति गजपति नृपति तोरिस करि यश न गँवाइये ॥

कमलपत्र दलमूल और जात जल चरकूँ ।
 महिक महिक ना गनूँ जहर की डली न राखूँ ॥
 किते मूसरी फार आठ मुट्ठी कर थामू । नरदम मारूँ
 चरन नाम गोविन्द राकूँ ॥ सुन सुरता सुन रावरे

कभी न तेजसु तुम चढ़ो । बैताल कहै सुन विक्रम
आठ पहर जूमत रहो ॥

बचन तो ऐसे दीजिये जैसे दशरथ भान । पिता
पुत्र दोनों गये बचन न दीन्हो जान ॥ बचन
बलौ बलिराज बचन कौरव बन खण्डो । बचन करन
लगे कोश बचन कौरव बन मण्डो ॥ बचन लाग
हरिश्चन्द्र नीच घर नारि समर्प्यो । बचन लाग जगदेव
शीश कंकालिहि अर्प्यो ॥ बार २ बैताल भनत तो
कागहि जिह्वा काढ़िये । जर जाय लक्ष विक्रम तनय
तो बोलि बचन मत पलटिये ॥

मरैसुम यजमान मरैकमचालक टट्टू । मरै कर्कशा
नारि मरै वो खसम निखट्टू ॥ पुत्र वही मर जाय
जो कुल में दाग लगावै । मित्र वही मर जाय समय
पर काम न आवै ॥ बे नियाव राजा मरै इनके मरे न
रोइये । बैताल कहै सुन विक्रम तबै नींद भर सोइये ॥

शशि बिनु सूनो रैन ज्ञान बिन हिरदय सूनो ।
कुल सूनो बिन पुत्र पत्र बिन तरुवर सूनो ॥ गज

सूनो बिन दन्त ललित बिनु शायर सूनो । बिप्र
मुनो बिन बेद बास बिन पुहपर सूनो ॥ सूना राज
सावन्त बिन सो घटा सूनो बिन दामिनी । कह
बैताल सुन विक्रम सो पति बिन सूनो कामिनी ॥

दबकर पढ़े कवित्त पास मोची तुक जोरे । मलहा पढ़े
कवित्त नाव गहिरे में बोरे ॥ भुजवा पढ़े कवित्त जीव
दसबीस जरावै । धोबी पढ़े कवित्त छानकर कलप चढ़ावै ॥
कुछ २ कवित्त नाऊ पढ़े सो बार मूढ़ि आगे धरे ।
बैताल कहै सुन विक्रम सो अब कवित्त सब नर पढ़े ॥

हाथी चंचल होय भूपट मैदान दिखावै । राजा चंचल
होय मुलक को सर कर लावै ॥ पंडित चंचल होय
सभा उत्तर दे आवै । चंचल होय तुरंग सवारे युद्ध
जितावै ॥ ये चारो चंचल भये सो राजा पंडित गज तुरी ।
बैताल कहै सुनु विक्रम तो एक नारि चंचल बुरी ॥

पहिरे भिगुले पटा पाग सिर टेढ़ी बाँधे । घर में तेल
न लोन प्रीति चरी सो साधे ॥ बातन में गहलेय युद्ध
आँखिन नहिं देखै । अवघट घट में जाय त्रिया सो लेखा

मांगै ॥ जानत हैं सो जानते सब दुख सुख साथी कर्म के ।
बैताल कहै मुनु विक्रम तो ये लक्षण नामर्द के ॥

मर्द शीश पर नवै मर्द बोली पहिचाने । मर्द खिलावै
साय मर्द चिन्ता नहिं माने ॥ मर्द देय अरु लेय मर्द
को मर्द बचावै । गहिरे सकरे काम मर्द के मर्द आवै ॥
पुनि मर्द उनहीं को जानिये जो दुख सुख साथी कर्म के ।
बैताल कहै मुनु विक्रम तो ये लक्षण सब मर्द के ॥

चोर चुप्पकर रहे जो पर घर डुक्के । जोरु चुपकर
रहै पिया बिन बोल न सके ॥ चोरी चुपकर रहे शील
साहेब को मानै । गुँगा चुपकर रहे बात एको नहिं
जानै ॥ वृक्ष और जलजीव सब पवन साथ उड़ते रहें ।
बैताल कहै मुनु विक्रम कोइ २ कवि कुछ २ कहें ॥

॥ इति ॥

1875

1875

1875

1875

1875

1875

1875

1875

1875

1875

1875

1875

1875

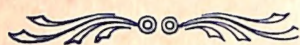
1875

1875

1875

1875

धार्मिक तथा अन्य पुस्तकें



नाम पुस्तक	मूल्य	नाम पुस्तक	मूल्य
नवीन संग्रह	१)	भक्तिसागर	६॥)
शिवराजभूषण	२॥)	शिवपुराण भाषा	१२)
कुण्डलिया रामायण सटीक ॥=)		मानसमंथन	२)
कवितावली रामायण सटीक १॥)		आनन्दसागर प्रथम भाग	२)
गीतावली रामायण सटीक १=)		चरणक्यनीति	॥)
प्रेमसागर	३)	भक्तमाल बड़ा सटीक	१२)
भगवद्गीता भाषा	२)	योगवाशिष्ठ भाषा सम्पूर्ण	२२)
रामायण सटीक मध्यम	१०)	महाभारत सबलसिंह	७)
सुखसागर मध्यम	१२)	बृजविलास कवितावली	१)
विश्रामसागर मध्यम	७)	रहीम कवितावली	॥)
भगवद्गीता भा० टी०	६)	सूरदास का दृष्टिकूट	॥)
भक्तमाल भाषा	६)	सुन्दरविलास	१)

मिलने का पता—

(राजा) रामकुमार-प्रेस-बुकडिपो, लखनऊ.